हिन्दी

(संचयन) (पाठ 2)(गुरदयाल सिंह – सपनों के से दिन)
(कक्षा 10)

बोध प्रश्न

प्रश्न 1:
कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती। पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है ?

उत्तर 1:
लेखक के आधे से अधिक साथी राजस्थान या हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए परिवारों से थे। जब बहुत छोटे थे तो उनकी बोली कम समझ पाते। उनके कुछ शब्द सुनकर हँसी आने लगती थी। परंतु खेलते तो सभी एक–दूसरे की बात खूब अच्छी तरह समझ लेते थे।

प्रश्न 2:
पीटी साहब की 'शाबाश' फौज के तमगों–सी क्यों लगती थी ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 2:
पी0टी0 साहब बहुड़ ही सख्त अध्यापक थे । सही काम करने पर तारीफ़ भी करते थे और षाबाषी भी देते थे। पी0टी0 के समय लाइन में जरा सा इधर–उधर होने पर सजा देते थे और अच्छी पी0टी0 करने पर षाबाष कह कर उत्साह बढ़ाते थे उस समय बच्चों को उनकी षाबाष फौज के तमगे जैसी लगती थी ।

प्रश्न 3:
नयी श्रेणी में जाने और नयी कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था?

उत्तर 3:
नई श्रेणी में आते ही हेडमास्टर साहब अमीर घर के बच्चों की किताबें लेखक को लाकर देते । बाल मन उन पुरानी किताबों को देखकर उदास हो जाता था । दूसरी ओर नई कक्षा मतलब और अधिक पढ़ाई पहले से ज्यादा स्लेबस अध्यापकों की बच्चों से ज्यादा की उम्मीद। इन्हीं सब बातों के कारण लेखक का बालमन उदास हो उठता था ।

प्रश्न 4:
स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्त्वपूर्ण 'आदमी' फौजी जवान क्यों समझने लगता था ?

उत्तर 4:
परेड के समय साफ़ धुले कपड़े पॉलिष किए जूते और धुली जुराब लहनकर जब परेड करते तो लेखक को ऐसा लगता कि मानों वह भी सेना का एक सिपाही हो।

प्रश्न 5:
हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया ?

उत्तर 5:
एक दिन पी0टी0 मास्टर साहब फारसी का पाठ पढ़ा रहे थे उन्होंने बच्चों से याद करने को कहा बच्चों के न सुनाने पर उन्होंने बच्चों को मुर्गा बना दिया। उधर से निकलते समय हेडतास्टर साहब ने जब यह दृष्य देखा तो वक बहुत गुस्सा हो गए और पी0टी0 सर को मुअत्तल कर दिया ।

प्रश्न 6:

लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा ?

उत्तर 6:

लेखक के अनुसार उनहें स्कूल जाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था, लेकिन जब हाथ में रग बिरंगे झंडे लेकर गले में रुमाल बॉधकर परेड करने के लिए स्कूल जाना होता था जब उसे बहुत अच्छा लगता था जो साल भर की पढ़ाई में मिली षाबाषियों से भी बड़ा हुआ करता था ।

प्रश्न 7:

लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या–क्या योजनाएँ बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति 'बहादुर' बनने की कल्पना किया करता था?

उत्तर 7:

एक–एक दिन गिनते दिन खेल–कूद में और बीतते जाते। स्कूल की पिटाई का डर और बढ़ने लगता। परंतु डर भुलाने के लिए सोचते कि दस की क्या बात, सवाल तो पंद्रह भी आसानी से रोज निकाले जा सकते हैं। जब ऐसा हिसाब लगाने लगते तो छुट्टियाँ कम होते–होते जैसे भागने लगतीं। दिन बहुत छोटे लगने लगते। ऐसा महसूस होता जैसे सूरज भागकर दोपहरी में ही छिप जाता हो। जैसे–जैसे दिन 'छोटे' होने लगते स्कूल का भय बढ़ने लगता। हमारे कितने ही सहपाठी ऐसे भी होते जो छुट्टियों का काम करने की बजाय मास्टरों की पिटाई अधिक 'सस्ता सौदा' समझते थे। लेखक के जो साथी पिटाई से बहुत डरा करते, उन 'बहादुरों' की भाँति ही सोचने लगते। जैसा कि उनका सबसे बड़ा 'नेता' ओमा हुआ करता था।

प्रश्न 8:

पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पी0टी0 सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर 8:

पी0टी0 सर दुबले–पतले और ठिगने कद के थे , वे खाकी वर्दी पहना करते थे । उनकी आखें भूरी और तेज थीं । बहुत अनुषासनप्रिय थे कठोर दंड देते थे , सही काम करने पर षाबाषी भी देते थे । स्वभिमानी थे इसीलिए नौकरी से मुअत्तल होने पर वे हेडमास्टर साहब के सामने गिड़गिड़ाए नहीं चुपचाप चले गए ।

प्रश्न 9 :

विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर 9:

पाठ में बचों को अनुषासन में रखने के लिए कठोर दंड पिटाई आदि तरीकों को अपनाया गया है । आज के समय में ऐसा नहीं है । आज अध्यापकों को बच्चों के मन की भावनाओं को समझते हुए उनके साथ मित्रता का व्यवहार रखते हुए पढ़ाने का प्रषिक्षण दिया जाता है जिससे बच्चा स्कूल जाने से डरे नहीं बल्कि वहॉ प्रसन्नता के साथ जाए ।

प्रश्न 10 :
बचपन की यादें मन को गुदगुदाने वाली होती हैं विशेषकर स्कूली दिनों की। अपने अब तक के स्कूली जीवन की खट्टी–मीठी यादों को लिखिए।

उत्तर 10:
बचपन में स्कूल आपस में मिलकर षरारतें करने में बहुत मजा आता था । आपस में मिलकर एक दूसरे को सताना । दूसरे बच्चों का टिफिन चुराकर खाना । एक साथ मिलकर एक–दूसरे का खाना छीनकर खाना जरा–जरा सी बात पर लड़ना एक–दूसरे को मनाना । ये ऐसी यादें है जिन्हें चाहकर भी भुलाया नही जा सकता और उन क्षणों को किसी भी कीमत पर वापस नहीं लाया जा सकता ।

प्रश्न 11 :
प्रायः अभिभावक बच्चों को खेल–कूद में ज्यादा रुचि लेने पर रोकते हैं और समय बरबाद न करने की नसीहत देते हैं। बताइए।

(क) खेल आपके लिए क्यों जरूरी हैं ?

उत्तर क:
खेल स्वस्थ तन–मन ओर अच्छे स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है । खेल खेलने से षरीर में फुर्ती बनी रहती है और मस्तिष्क भी अच्छी तरह काम करता है ।

(ख) आप कौन से ऐसे नियम–कायदों को अपनाएँगे जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो?

उत्तर ख:
हम केवल खेल–कूद को अपना लक्ष्य नहीं बनाएंगे उसके साथ–साथ अपनी पढ़ाई पर भी पूरा ध्यान देंगे जिससे हमारे अविभावकों को हम पर गर्व हो । वे सबके सामने सर उठाकर कह सकें कि हमारा बच्चा खेलता है तो क्या वह पढ़ाई में भी सबसे आगे है।

TOPPERS
CLAN